**AMOGHVARTA**

**ISSN : 2583-3189**

# गांधी और अंबेडकर का राष्ट्रवाद के दृष्टिकोण में नैतिकता और न्याय की परस्पर क्रिया

**ORIGINAL ARTICLE**

**Authors**
**कमलेश कुमारी**
राजनीति शास्त्र विभाग
**एवं**
**जितेश कुमार**
इतिहास विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाडी, हरियाणा, भारत

## शोध सार

*राष्ट्रवाद एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलन का एक पक्ष है, जो देश की स्वाभिमानी सीमाएं और लोकप्रियताओं को उज्ज्वल करने की दिशा में काम करता है। इसका उद्देश्य राष्ट्र के उत्तराधिकार, एकता और स्वाभिमान की प्रशंसा करना है (एंथनी डी. स्मिथ)। राष्ट्रवाद देश के विकास, सुरक्षा, और लोकतंत्र के लिए महत्तवपूर्ण मानता है। इसका प्रमुख लक्ष्य देश के सभी नागरिकों को एक रूप में जोड़ना, उनके अधिकार और कर्तव्य को बढ़ावा देना और देश की स्वाभाविक समृद्धि को बढ़ाना होता है। राष्ट्रवाद देश की भाषा, संस्कृति और इतिहास को प्रशस्त करता है। यह एक सामान्य रूप से देशभक्ति और राष्ट्रभावना को व्यक्तित्व और राष्ट्रीय उन्माद (चरम राष्ट्रवाद) से विभाजित करता है। राष्ट्रवाद के लिए डॉ. अम्बेडकर का दृष्टिकोण और भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में उनकी भूमिका सामाजिक न्याय, समानता और एक एकजुट भारत के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है जो अपने सभी नागरिकों के अधिकारों और सम्मान का सम्मान करता है, उनकी पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना। गांधी जी के विचार में राष्ट्रवाद एक समरसता और समग्र समाज के लिए एक साधन था, जिसकी हर व्यक्ति, चाहे वो कोई भी धर्म हो, जाति, या वर्ग से हो, समावेशित हो और उनके अधिकार सुरक्षित रहें। उनका यह राष्ट्रवादी दर्शन देश की आजादी के लिए संघर्ष करने के साथ ही एक समरसता, सामाजिक समानता और लोकप्रिय राष्ट्रवाद को प्रशंसित करता था (माइकल ई. ब्राउन)। डॉ. अम्बेडकर के दृष्टिकोण को 'सबालटर्न राष्ट्रवाद' के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, जिसमें समाज के पिछड़े और मार्जिनलाइज़ सेक्शन के उन्नति की दिशा में ध्यान दिया गया, जबकि गांधी ने राष्ट्रवाद के बोझ को समझने के लिए सार्विक दृष्टिकोण का अध्ययन किया। गांधी का दृष्टिकोण समाज के एक खंड की मुक्ति और सशक्तिकरण से सीमित नहीं था, बल्कि यह एक भारतीय दृष्टिकोण का पालन करता था। (रामचंद्र गुहा) यह पेपर राष्ट्रवाद के सन्दर्भ में अम्बेडकर और गांधी के दृष्टिकोण पर व्याख्या करता है।*

## मुख्य शब्द

*राष्ट्रवाद, गांधी, अम्बेडकर, संविधान, राष्ट्र, समाज, राज्य.*

## राष्ट्रवाद के बारे में अम्बेडकर की भूमिका

अम्बेडकर भारतीय समाज के सबसे दलित और वंचित वर्गों के साथ खड़े थे, जिन वर्गों की सार्वजनिक जीवन में कोई आवाज नहीं थी। अम्बेडकर द्वारा इन वर्गों की सामाजिक लामबंदी से राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में मदद मिली। मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में अम्बेडकर ने एक मजबूत राष्ट्र–राज्य की वकालत की (डी आर जाटव)।

बाबा साहब डॉ. बी आर अंबेडकर ने स्वतंत्रता संघर्ष में महत्तवपूर्ण योगदान दिया। उनका योगदान सामाजिक न्याय और समानता के प्रति था। पूना पैक्ट 1932 में, अम्बेडकर ने दलित समुदाय के लिए अलग से माताधिकार की मांग की, जिसका नाम 'पूना पैक्ट' है। इसे अन्होने दलित समुदाय के प्रतिनिधियों को अलग से माताधिकार प्रदान किया। अनुसूचित जाति महासंघ अम्बेडकर ने अनुसूचित जाति महासंघ की स्थापना की, जिसे उन्होंने दलित समुदाय के प्रतिनिधियों के लिए एक आवाज प्रदान की। डॉ. बी आर अंबेडकर, भारतीय संविधान के मुख्य निर्माता भी थे। उन्हें संविधान को तैयार करने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए और संविधान के प्रचार में सामाजिक समानता और न्याय को मध्य नजर रखना चाहिए। उनका योगदान स्वतंत्रता संघर्ष के दौर में भारत में सामाजिक समानता और न्याय की दिशा में महत्व पूर्ण था, और उनका कार्य आज भी स्मृति में है। (एस वी बर्दापुरकर)

दास प्रथा अम्बेडकर ने स्पष्ट रूप से 'समुदाय' और 'राष्ट्र' के बीच अंतर करते हुए कहा कि ''एक समुदाय को सुरक्षा का अधिकार है जबकि एक राष्ट्र को अलग होने की मांग करने का अधिकार है।'' अंबेडकर, दास प्रथा (अस्पृश्यता) के विरुद्ध एक महान सामाजिक सुधारक थे और उन्हें इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किए गए। उनके विचार दस प्रथा के समानता और दलित समुदाय के सामाजिक समानता के प्रति थे। कुछ मुख्य विचार अम्बेडकर के दास प्रथा के विषय में:

**जाति व्यवस्था का विनाश (जाति व्यवस्था का विनाश):** अम्बेडकर ने ''जाति का विनाश'' नाम एक प्रसिद्ध प्रवचन दिया, जिसने उन्हें जाति व्यवस्था और दास प्रथा के खिलाफ खुला समर्थन दिया। उन्होंने जाति व्यवस्था को एक बड़ी समस्या बताई और उसका समग्र विनाश किया जाना चाहिए।

**स्वतंत्रता संघर्ष:** अंबेडकर स्वतंत्रता संघर्ष के दौर में दलितों के लिए अलग माताधिकार की मांग थी, ताकि उनका सामाजिक सम्मान बढ़ सके। ये पूना पैक्ट के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

**सामाजिक समानता:** अम्बेडकर ने सामाजिक समानता को आधार समाज की स्थापना के प्रति बल दिया। उनका समर्थन, जनसंख्या, शिक्षा और रोजगार के लिए था, ताकि दलित समुदाय के लोग सम्मान के सभी क्षेत्रों में शामिल हो सकें। हिंदू धर्म और नव– बौद्ध धर्मरू अंबेडकर ने हिंदू धर्म को सामाजिक समानता की रोशनी में देखा और समर्थन दिया। बुरे में, वे नव– बौद्ध धर्म का प्रचार करके, अपने अनुयाइयों को भिक्खु बनाया और एक नया मजहब चुना। बीआर अंबेडकर के विचार दास प्रथा और सामाजिक समानता के प्रति अधिकारिता और संवेदनशीलता के साथ थे, और उनका योगदान आज भी सामाजिक सुधार और न्याय के मार्ग पर जाना जाता है।

अंबेडकर का राष्ट्रवाद का संस्करण गांधीवादियों और अन्य लोगों द्वारा प्रचारित के बिल्कुल विपरीत था। गांधी और उनके अनुयायी एक सांस्कृतिक और धार्मिक राष्ट्रवादी थे, जबकि अंबेडकर को समाजशास्त्रीय या सबाल्टर्न राष्ट्रवादी के व्यापक ढांचे में परिभाषित किया गया था, जो राष्ट्रवाद को सामाजिक संरचना और आर्थिक के दृष्टिकोण से देखते थे।

डॉ. बीआर अंबेडकर ने 'सबालटर्न राष्ट्रवाद' को एक अहम स्थिति दी और इसके प्रति समर्पित थे। उनका सबाल्टर्न राष्ट्रवाद (सबाल्टर्न नेशनलिज्म) उन दलितों और पिछड़े वर्गों के अधिकार, समानता, और सामाजिक न्याय की रक्षा करता था , जैसे दलितों के अधिकार,समानता, आदि। (गेल ओमवेट)

बुनियादी मानव अधिकार अम्बेडकर वास्तव में एक सच्चे लोकतंत्रवादी थे जो एक स्वतंत्र और मुक्त भारत

के लिए खड़े थे, हालांकि उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए गांधी के समान साधनों और तरीकों का पालन नहीं किया। वे निश्चित रूप से विभिन्न मुद्दों, विषयों और विषयों पर गांधी से असहमत थे, लेकिन दोनों का सर्वोच्च उद्देश्य और लक्ष्य भारत को ब्रिटिश शासन से आज़ाद कराना था। कई अवसरों पर अम्बेडकर और गांधी एकमत नहीं थे। उदाहरण के लिए, दास प्रथा, हरिजनोद्धारन, और पूना पैक्ट जैसे प्रमुख मुद्दे शामिल थे यहां कुछ मुख्य विवादों की चर्चा की गई है:

**दास प्रथा (अस्पश्यता):** महात्मा गांधी ने दास प्रथा के विरोध में भी प्रमुख योगदान दिया, लेकिन उनका स्थान अलग था। गांधी दास प्रथा का विनाश चाहते थे, लेकिन उनका उपाय यह था कि ब्राह्मणों को समझा कर सुधारो अम्बेडकर, विचार में एक मजबूत समर्थक और सरकार के समर्थन की या रुख किये, जिसे दलित समुदाय को अलग अधिकार मिल सके।

**हरिजनोद्धार (दलित उत्थान):** गांधी ने 'हरिजन' शब्द का प्रचार किया, जिसे उन्होंने दलित समुदाय के लिए तैयार किया। अम्बेडकर ने इस पर विरोध किया और हरिजनोद्धार को समर्थन न दिया, उनका उपयोग दलित समुदाय की सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए क्यों किया गया, उन्हें अलग–अलग अधिकार देना था। पूना पैक्ट 1932 में, अंबेडकर और गांधी के बीच दस प्रथा के मुद्दे पर एक विवाद था। इस विवाद का परिणम 'पूना पैक्ट' का हुआ, जिसमें अंबेडकर ने अलग माताधिकार की मांग हटाई और दलित समुदाय के लिए एक निश्चित अनुपत में सामान्य माताधिकार की सलाह दी। इस पर गांधी का अनशन करने की धमकी दी थी। यह विवाद भारतीय सामाजिक सुधार के प्रति डोनो नेता के प्रशासक यश प्रदान करता है। अंबेडकर ने अलग माताधिकार की या रुख की और सामाजिक समानता के प्रति खुले रूप से लड़ाई की, जबकी गांधी दास प्रथा का समग्र विनाश चाहा, लेकिन सुधार के लिए धार्मिक मार्ग को ही सही मानते थे।

अंबेडकर के धार्मिक विचार धर्म, सामाजिक सुधार, और समानता के प्रति उनके दृष्टिकोण को व्यक्त करते थे। उनका धार्मिक विचार निम्न प्रकार से थारू अंबेडकर ने हिंदू धर्म से अलग हो कर बौद्ध धर्म को अपनाया। 1956 में, उनको नागपुर में 'धर्मांतर' (दीन दयाल उपाध्याय) के दौरन, लाखो दलित समुदाय के लोगों को बौद्ध धर्म में परिवर्तन करने के लिए प्रेरित किया। उनका इस धर्मांतर के साथ, उन्हें समानता, न्याय, और सामाजिक सुधार के मूल तत्वों को प्रशंसित किया। अम्बेडकर ने अहिंसा (अहिंसा) को महत्वपूर्ण मूल मंत्र माना। उनका विचार अहिंसा, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक शक्ति साधन है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों को भी समझा। अम्बेडकर का धार्मिक विचार समानता और न्याय के प्रति था। उनका बौद्ध धर्म उनके लिए एक आदर्श था, जिसकी समानता, न्याय, और सामाजिक समृद्धि के प्रति दृढ़ विश्वास था। वे इस विचार को अपने अनुयाइयों के लिए एक मजबूत धार्मिक आदर्श के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। (टी. एन मदन)

अम्बेडकर धार्मिक सहिष्णुता की वकालत करते थे और मानते थे कि धर्म वह शक्ति है जिसने मानव समाज की एकजुटता को गहरा किया है और इसके नाम पर कोई उत्पीड़न नहीं होना चाहिए (अंबेडकरः लाइफ एंड मिशन)। भाषा के मुद्दे पर अंबेडकर ने एक आम भाषा की आवश्यकता पर जोर दिया जो राष्ट्रीयता की एकता और भावना को मजबूत करने के साथ–साथ नस्लीय और सांस्कृतिक संघर्षों को दूर करने में मदद कर सके, हालांकि उन्होंने एक देश में भाषा की विविधता के अवगुणों को पहचाना, अंबेडकर ने लोगों को चेतावनी भी दी। राजनीति में नायक पूजा की संस्कृति के खिलाफ़ थे, क्योंकि उन्हें लगा कि यह लोगों में राजनीतिक चेतना को ख़त्म कर देगा। उनका विचार था कि राष्ट्र के लोगों की सेवा करना राजनीतिक बंदूकों की पूजा करने से अधिक महान है। उनका विचार था कि भक्ति या पूजा आपको धर्म में मुक्ति के मार्ग पर ले जा सकती है, लेकिन राजनीति में इसका प्रतिकूल प्रभाव हो सकता है और पतन और तानाशाही हो सकती है। अम्बेडकर ने आखिरी बार एक समाज सुधारक और राजनीतिज्ञ के रूप में देश की सेवा की, जिसमें उनमें एक दूरदर्शी और मानवतावादी के गुण भी शामिल थे। भारत के लिए अंबेडकर के विचार और दृष्टिकोण हर मायने में व्यावहारिक, उदारवादी और राष्ट्रवादी थे। आधुनिक भारत के मुख्य वास्तुकार डॉ. बीआर अंबेडकर आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने पहले हुआ करते थे।

## राष्ट्रवाद पर गांधीजी की विचारधारा

राष्ट्रवाद का विचार पूर्व अग्रसरक समय के बाद यूरोपीय देशों में उत्पन्न हुआ था। इसके साथ ही, शताब्दियों के साथ, समुदाय अपनी जाति और भाषा के आधार पर स्वयं को संगठित करने लगे। यह राष्ट्र और राष्ट्रवाद का विचार एकतावाद में गहरा निहित था । इसने एक शाश्वत दुश्मन राज्य या समुदाय की आवश्यकता भी बना दी। इसके बाद, यह यूरोप की राजनीति को परिभाषित करने लगा, जिसके परिणामस्वरूप कई युद्ध और दो भयंकर विश्व युद्धों में परिणत हुआ (डेविड स्मिथ द्वारा राष्ट्रवादः एक दार्शनिक पूछताछ)। भारत में तीन दशकों से अधिक समय तक राष्ट्रीय आंदोलन का मार्गदर्शन करने वाले गांधी ने इस राष्ट्रवाद के विचार को तुच्छ माना। उस समय के भारतीय, पश्चिमी शिक्षा और उपनिवेशवाद के प्रभाव में थे और उन्होंने यूरोप के राष्ट्रवाद को ग्रहण किया। स्वतंत्रता संग्राम के कई स्वतंत्रता सेनानियों ने, खासकर उग्रवादी जैसे लाला लाजपत राय, वी.डी. सावरकर, जैसे यूरोपीय राष्ट्रवादियों को जैसे मेजिनी और गैरिबल्डी का आदर किया।

महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद 'सर्वोदयी' और 'अहिंसा' के मूल मूल्यों पर आधारित था। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे और उनका राष्ट्रवाद सामाजिक और आर्थिक समरसता की ओर मोड़ने की कोशिश करता था। उनका राष्ट्रवाद उनकी आवश्यकताओं के लिए स्वयंसेवा, अहिंसा, गांधीगीत, और ग्राम स्वराज के आदर्शों पर आधारित था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से भारतीय जनता को एक समृद्ध, स्वतंत्र और समरस समाज की ओर प्रेरित किया और उन्होंने विदेशी शासन के खिलाफ अहिंसा के सिद्धांत का पालन किया (सत्य के साथ मेरे प्रयोग)।

राष्ट्रवाद पर गांधी के विचार, उनके द्वारा दिए गए बयानों में से एक स्वयं स्पष्ट है कि उन्होंने व्यक्तिवाद, रिश्तेदारी, क्षेत्रवाद, राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीयवाद की प्रतीत होने वाली विरोधाभासी अवधारणाओं/विचारों के बीच आवश्यक सामंजस्य कैसे स्थापित किया ''व्यक्ति को इसके लिए मरना पड़ता है'' परिवार को गांव के लिए, गांव को जिले के लिए, जिले को प्रांत के लिए और प्रांत को देश के लिए मरना पड़ता है। (लुईस फिशर)

महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद पर एक सूक्ष्म दृष्टिकोण था। वह राष्ट्रवाद के एक ऐसे रूप में विश्वास करते थे जो भारत की संस्कृति और परंपराओं में निहित था, जो 'सर्वोदय' या सभी के कल्याण के विचार पर जोर देता था। उन्होंने एक ऐसे राष्ट्रवाद की वकालत की जो संकीर्ण जातीय या भाषाई विभाजन से परे हो और सभी भारतीयों, विशेषकर हाशिये पर पड़े और उत्पीड़ित लोगों के उत्थान पर केंद्रित हो। गांधीजी का राष्ट्रवाद अहिंसा (अहिंसा) और सविनय अवज्ञा के सिद्धांतों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ था। उनका मानना था कि भारत की आजादी की लड़ाई शांतिपूर्ण तरीकों से होनी चाहिए और आज़ादी की लड़ाई में हिंसा का कोई स्थान नहीं है।

वह उस तरह के राष्ट्रवाद के आलोचक थे जो लोगों को धार्मिक, जातीय या भाषाई आधार पर विभाजित करने की कोशिश करता था। उन्होंने सांप्रदायिकता का विरोध किया और उनका मानना था कि सच्चा राष्ट्रवाद केवल भारत के विविध समुदायों के बीच एकता और सद्भाव को बढ़ावा देकर ही हासिल किया जा सकता है।

स्ट्रेची, एक प्रसिद्ध अंग्रेजी सिविल सेवक जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की आलोचना की और कहा कि भारत और भारतीयों में राष्ट्रवाद की कोई अवधारणा नहीं है, भारत केवल मानचित्र पर मौजूद है, इसका कोई रूप नहीं है, क्योंकि समाज खंडित है और इसमें कई सामाजिक दरारें हैं। वह आगे लिखते हैं कि भारत में राष्ट्रीयता की भावना पैदा करने का श्रेय अंग्रेजों को जाना चाहिए। उन्होंने रेलवे और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से भारत में राष्ट्रवाद की भावना पैदा की है। इसके विरोध में गांधी जी अपनी पुस्तक हिंद स्वराज में लिखते हैं कि भारत तीर्थों की भूमि रही है और यहां के लोगों में विभिन्न तीर्थ स्थलों के माध्यम से एकजुट समुदाय की भावना है। भारत में राष्ट्रवाद प्राचीन काल से ही प्रबल था।

गांधी के राष्ट्रवाद पर ऐसे दृष्टिकोण को Diana L Eck dh 'A Sacred Geography' में पुनरावलोकन किया गया है। उनकी किताब में, उन्होंने यह दावा किया है कि भारत ने राजनैतिक एकता को शताब्दियों बाद ही हासिल

किया हो, लेकिन इस भूगोलिक और क्षेत्रीय एकता के विचार में स्पष्ट रूप से विद्वेष किया जा सकता है, जिसे ग्रीक भाषा में 'इंडिका' कहा गया जिन क्षेत्रों को इंडस नदी के पार कहा गया, लेकिन जिन पवित्र व्यक्तियों ने पहले ही 'भारत' कहा होगा। गांधी का समुद्री वृत्त का आदान–प्रदान उनके राष्ट्रवाद के दृष्टिकोण से जुड़ सकता है। गांधी के अनुसार, हर गांव और प्रांतिक इकाई राष्ट्र से जुड़ी हुई है। मानवता की आत्मा उस जुड़ाव में निहित है, जिसे गांधीजी अपने भारतीय राष्ट्र के ज्ञान के माध्यम से प्रतिबिंबित करना चाहते थे, समुद्री वृत्त के सिद्धांत के माध्यम से। गांधी ने यह कहा कि हम भारतीय होने पर गर्व कर सकते हैं, लेकिन मानवता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है

गांधीजी के राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैः

1. गांधी जी भारत के व्यापक क्षेत्र में राष्ट्रवाद को लेकर आए। देश के राष्ट्रीय आंदोलन में एक अभूतपूर्व सेनानी के रूप में उनकी भूमिका रही। अतः भारतीय जनता ने अधिकांशतः उन्हें राजनीतिक नेता और देशभक्त राष्ट्रवादी के रूप में ही अधिक स्वीकार किया है। निःसंदेह गांधी जी राष्ट्रवादी थे लेकिन जो राष्ट्रवाद आज दुनियां के लिए घातक हो रहा है।
2. विश्व की शांति के लिए भारी खतरा उत्पन्न कर दिया है, उस राष्ट्रवाद के समर्थक कभी भी गांधी जी नहीं रहे। गांधी जी राजनीति की अपेक्षा नैतिक अधिक थे और इसलिए उनका राष्टवाद नैतिक साम्राज्य, जीवन की सहिष्णुता और आध्यात्मिक सिद्धान्तों पर आधारित था। उनका राष्ट्रवाद वस्तुतः उनके विश्व प्रेम का शाश्वत सत्य था। गांधी जी सकारात्मक राष्ट्रवाद के समर्थक थे जो देश के विभिन्न धार्मिक, भाषाई, जातिगत और सामुदायिक विभेदों को एक सूत्र में जोड़ता है और कभी भी अपने को समूची मानवता से अलग नहीं समझता। उन्होंने राष्ट्रवाद को हमारे सामने अत्यन्त शुद्ध रूप में प्रस्तुत किया। उनका विचार था कि मनुष्य का लक्ष्य विश्व मैत्री का होना चाहिए। हमें विश्व भ्रातृत्व के लिए जीना मरना चाहिए। गाँधी जी केवल सच्चे राष्ट्रवादी ही नहीं वरन् अंतर्राष्ट्रवादी भी थे। उनके आंदोलनों के पीछे त्याग की भावना है कि मानव को अपने राष्ट्र से आगे जाकर संपूर्ण मानव जाति के साथ परस्पर स्नेह के साथ रहना चाहिए।
3. गाँधी जी की राष्ट्रवाद की अवधारणा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को परिलखित करती हैं (गांधीः द ईयर्स चेंज्ड द वर्ल्ड)।

## निष्कर्ष

भारत में राष्ट्रवाद के प्रति महात्मा गांधी और अम्बेडकर के अलग लेकिन परस्पर जुड़े हुए दृष्टिकोण थे। गांधीजी का राष्ट्रवाद अहिंसा (अहिंसा) और सविनय अवज्ञा (सत्याग्रह) के सिद्धांतों में निहित था। उन्होंने एक एकजुट, स्वतंत्र भारत की कल्पना की जहां सभी समुदाय सौहार्दपूर्वक सह–अस्तित्व में रहेंगे। आत्मनिर्भरता (स्वावलंबन), ग्रामीण विकास और गरीबों के उत्थान पर उनका ध्यान राष्ट्रवाद के आर्थिक और सामाजिक पहलुओं पर जोर देता था। गांधीजी की समावेशिता के प्रति प्रतिबद्धता और अस्पृश्यता के खिलाफ उनकी लड़ाई उनकी राष्ट्रवादी दृष्टि के प्रमुख घटक थे।

दूसरी ओर, डॉ. बीआर अंबेडकर ने भी भारत की आजादी की वकालत करते हुए सामाजिक न्याय पर अधिक विशेष ध्यान दिया। वह हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर दलितों (जिन्हें पहले 'अछूत' कहा जाता था) के अधिकारों के कट्टर समर्थक थे। अम्बेडकर का राष्ट्रवाद जाति आधारित भेदभाव के उन्मूलन और एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज की स्थापना से गहराई से जुड़ा हुआ था। दलितों के लिए संवैधानिक सुरक्षा उपायों और आरक्षण पर उनका जोर उनके प्रति दृष्टिकोण को दर्शाता है।

## संदर्भ सूची

1. गायकवाड़, एसएम (1998), अम्बेडकर और भारतीय राष्ट्रवाद. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक. 33(10), पृ. 515–518.

2. अम्बेडकर, बी.आर., संविधान सभा बहस, आधिकारिक रिपोर्ट, नई दिल्ली, 1989. वॉल्यूम. सातवीं, पृ 420.
3. अम्बेडकर द्वारा लिखित, *जाति का विनाश,* यह अम्बेडकर का मौलिक पाठ है जो जाति व्यवस्था की आलोचना करता है और एक समावेशी भारतीय राष्ट्रवाद के लिए उनके दृष्टिकोण पर चर्चा करता है।
4. अम्बेडकर, बी. आर. डॉ. कीर में उद्धृत। धनंजय, ओपी. एन, पी.91 कीर, धनंजय, ऑप. सीआईएल पी–182
5. अम्बेडकर बी. आर., *कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया,* ठाकर और Gandh MK, Harijan, 11-07-1936
6. मदन टी.एन., धर्म और सामाजिक न्याय – धर्म और सामाजिक न्याय के प्रति अम्बेडकर के दृष्टिकोण का अध्ययन।
7. कीर धनंजय, *डॉ. अम्बेडकरः जीवन और मिशन,* एक जीवनी जिसमें अम्बेडकर के धार्मिक दर्शन की चर्चा शामिल है।
8. स्मिथ डेविड *राष्ट्रवादः एक दार्शनिक पूछताछ*।
9. उक्त., पृ.95. कीर, *धनंजय अम्बेडकर लाइफ एण्ड मिशन,* पॉपुलर प्रकाशन, बम्बई, 1954, पृष्ठ–473।
10. Gandhi M.K. (1938) *Hind Swaraj,* Ahmedabad Navjivan Publication, M. K. Gandhi, Young India, 18 June 1925.

––==00==––